classmate

Date
Page

DATE: 25/08/2020 [Page: 1 to 3

CLASS: B.ACHIPART-2ND

SUBJECT: POLITICAL SCIENCE

PAPER : III ( INDIAN GOVERNMENT

CH: 08 (PARLIAMENT : LOKSABHA)

LECTURE NO. - 45 (FORTY FIVE)

OM KUMAR SINGH

- ASSISTANT PROPESSOR

DEPTT. OF POL. SC.

D. B. COLLEGE, JAYNAGAR

LINMU, DARBHANGA

भारतीय संयह की प्रभुसता की सीमा

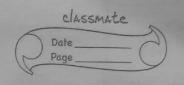
संस्था नहीं है इस के कार्यी पर क्रानेक सीमार, जी

(i) सिर्द्य और कड़ीर चैविधान अर्थात संविधान में संबोधन हे द विकीध प्रक्रिया —

मियन जावधार्मी हारा सीमिन है। मं विधान के अनुस्केह 245(1) में स्पष्ट उल्लेख हैं कि "ट्यवखाएन आकार्यों का उपयोग संस् मं विधान के अनुसार करेंगी।" संविधान के कानूनों का निर्मान ही था संविधान में संयोधन करना ही, एक विधान में मंत्रीधन करना ही, एक विधान में कुढ़ रेले जावधान हैं जिसमें एंग्रीधन हैं के संविधान में कुढ़ रेले जावधान हैं जिसमें एंग्रीधन हैं के संविधान में कुढ़ रेले जावधान हैं जिसमें एंग्रीधन हैं के संविधान के कार्न होने निर्हि धहान से प्रताब पारित किया जाना आवश्यक हैं उस प्रकार कठीर संविधान के कार्य संविधान के कार्य संविधान की सामित ही गई है।

(ii) संविधान की सर्वेटियता का पिहाँत तथा संविधान के मूर्ते हाँचे करी अवधारणा—

भारतीय संविधान संवह की प्रमुखना प्रहान नहीं करता, बाल्के घर संविधान " संविधान भ्रे स्वीट्यता के पिद्धांत" पर आधारित है। इस पिद्धांत के अनुक्षप उत्यतम क्यायामय में 1973 के केशवानंह आदती वनाम केरम राज्य के मामते में स्विधान के मूलठांचे



की बारणा का जित्याहन किया। इस ब्लारणा का आश्राय है कि लंगह में विश्वान के किसी आजा में संशोधान कर सकती है, परन्ते में विश्वान के मूल हाँचे को पर्वितित या नक नहीं कर सकती है। इस प्रकार, इस ट्यवस्था के हारा संसह शाकत सीमित की जिल्हा

(iii) संघाटमक ट्यवट्या —

है। विषयों पर विषद् की कानून बनाने की शाकते की निर्माणित हो गई है। प्रो० टी ० के रोपे के अनुवार कार्या में विधान के अन्तर्गत विधायिका है। ब्रिश्य मंबद के समान इसकी शाक्तियाँ असीमित नहीं है।

(iv) न्यायक पुनिवलाकन की त्यवस्था -

सीमा न्याचिक पुनिविधोकन की त्यवत्था है, जिसके अनुसार संस् दारा निर्दित किसी भी कामून की जान न्यामान पामिका दारा की जा सकती है। यदि उत्यतम न्यामान चंद्र दारा निर्दित कामून की चेविधान के विक्र या इसके मूल ठांचे के खिलाफ समझती हैं तो इसे अविधानिक

(V) राजनीतिक परिसीमार्थं -

है विरुद्ध विश्विमें का निर्माण नहीं केर मकते हैं। इने अन्तर्शहरीय समझीताओं अवाश्विमों यव कामूनों का भी यम्मान करना पड़ता ही संपद पर प्रशानमंत्री अगर मंद्रिमंडम का भी नियंत्रण यहता है। प्रशानमंत्री यंत्रद है निस्न सदन का विश्वत करवा सकता है।

